डी बी डब्ल्यू 187 (करण वंदना) किस्म की विशेषताएं

उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र के लिए गेहूँ की उन्नत किस्म

उपयुक्त क्षेत्र

यह प्रजाति पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, ओड़िसा, पश्चिमी बंगाल, असम एवं पूर्वोत्तर राज्यों के मैदानी भाग के सिंचित क्षेत्रों में समय से बुआई के लिए है।

डीबीडब्ल्यू 187 की विशेषताऐं

	औसत	सीमा
बाली निकलने की अवधि	77	76–80
परिपक्वता की अवधि	120	118–124
पौध की ऊँचाई	100	98–102
1000 दानों का भार	41	39–43

एक कदम, एक सफर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

AARONMedia 098964 33225

प्रकाशक :

डॉ. ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह, निदेशक
भा.कृ.अनु.प.-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल, 132001 भारत

किसान सहायता नम्बर (टोल फ्री)
1800 180 1891

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

विस्तार फोल्डर : 75/2018

डी बी डब्ल्यू 187 (करण वंदना)

उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र के लिए गेहूँ की उन्नत किस्म

संकलन एवं संपादन

रवीश चतरथ, सतीश कुमार, ओम प्रकाश टुटेजा, विकास गुप्ता, हनीफ खान, चन्द्र नाथ मिश्रा, राज कुमार एवं जी.पी. सिंह

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान
करनाल, 132001 भारत
ICAR-Indian Institute of Wheat & Barley Research
Karnal-132001 INDIA

वेबसाईट : www.iiwbr.org | कृषक हैल्पलाईन नः (टोल फ्री) ✆1800 180 1891

डी बी डब्ल्यू 187 (करण वंदना)

उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र के लिए गेहूँ की उन्नत किस्म

उत्पादकता

डीबीडब्ल्यू 187 किस्म से 48.8 कु./हेक्टेयर पैदावार मिलती है जो कि पूर्व की लोकप्रिय किस्म एचडी 2967 से 8.9 प्रतिशत के 0307 से 7.3 प्रतिशत तथा अधिक पाई गई है।

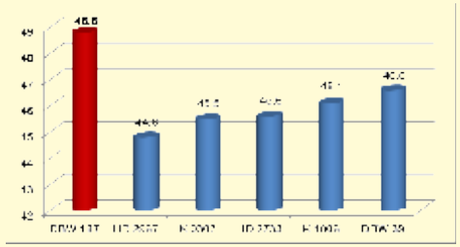

डीबीडब्ल्यू 187 किस्म की अधिकतम पैदावार क्षमता 64.7 कु./हेक्टेयर प्राप्त हुई है।

रोग प्रतिरोधकता डीबीडब्ल्यू 187 भूरे रतुआ रोग के लिए प्रतिरोधी होने के साथ–साथ पीला रतुआ रोग के लिए भी प्रतिरोधी है।

डीबीडब्ल्यू 187 के दानों में 10/10 ग्लू स्कोर तथा 11.4 प्रतिशत प्रोटीन पाई जाती है। इसमें उत्कृष्ट चपाती बनाने की विशेषता का स्कोर 7.7/10 पाया गया हैं।

डीबीडब्ल्यू 187 के दानों में उच्च लोह तत्व (43.1 पीपीएम) पाया गया है।

जलवायु एवं क्षेत्र की उपयुक्तता (उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र)
यह प्रजाति पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, ओड़िसा, पश्चिमी बंगाल, असम एवं पूर्वोत्तर राज्यों के मैदानी भाग के सिंचित क्षेत्रों में समय से बुआई के लिए है।

भूमि का चुनाव एवं तैयारी
समतल उपजाऊ मिट्टी का चुनाव करके, जुताई पूर्व सिंचाई के बाद उपयुक्त नमी होने पर खेत की तैयारी के लिए डिस्क हैरो, टिलर और भूमि समतल करने वाले यंत्र के साथ जुताई करके खेत को अच्छी तरह तैयार कर लेना चाहिए।

बीज उपचार
कार्बोक्सिन नमक कवकनाशी की 2.0–3.0 ग्राम/किलोग्राम से बीज उपचारित करना चाहिए।

बुआई का समय
नवम्बर 5–25

बीज दर और अंतराल
कतारों में बुआई के लिए 40 किलोग्राम/एकड़ मात्रा पंक्ति से पंक्ति की दूरी 20 से.मी. तथा पौधे के बीच की दूरी 5 से.मी. रखनी चाहिए।

उर्वरको की मात्रा एवं उपयोग का समय
24 किग्रा. फास्फोरस 16 किग्रा. पोटाश की पूरी मात्रा तथा नत्रजन की 60 किग्रा. मात्रा का 1/3 भाग बीजाई के समय तथा नत्रजन की शेष 2/3 मात्रा दो भागों में बुआई के 30 तथा 65 दिनों बाद प्रयोग करना चाहिए। उर्वरकों का प्रयोग मृदा जाँच के पश्चात् करना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण
पेंडिमथेलिन नाम अंकुरण–पूर्व खरपतवारनाशी की 400 ग्राम मात्रा प्रति एकड़ की दर से बीजाई के 0–3 दिनों के अन्दर प्रयोग करना चाहिए।

चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिए 2,4–डी नामक दवा की 200 ग्राम/एकड़ या मेट्स्ल्फुरोन 1.6 ग्राम/एकड़ या कारफेंट्राज़ोन 8 ग्राम/एकड़ नामक दवा को 120 लीटर पानी में का घोल बनाकर छिड़काव किया जा सकता है।

संकरी पत्ती या घासों के नियंत्रण के लिए क्लोडिनाफोप 24 ग्राम या फेनोक्षाप्रोप 40 ग्राम/एकड़ स्ल्फ़ोस्ल्फुरोन की 10 ग्राम/एकड़ मात्रा का प्रयोग करना चाहिए।

रोग एवं कीट नियंत्रण
डीबीडब्लू 187 पीला रतुआ और भूरा रतुआ के लिए प्रतिरोधी है परंतु यदि फसल में पीला एवं भूरा रतुआ, करनाल बंट या चूर्णील फफूंदी रोग के लक्षण दिखाई दे तो उसके नियंत्रण हेतु प्रोपिकोनजोल नामक दवा की 0.1 प्रतिशत (1.0 मिली/लीटर) मात्रा का 15 दिनों के अंतराल पर का दो बार छिड़काव करना चाहिए।

सिंचाई
फसल में सामान्यतः 4 से 5 सिंचाई की आवश्यकता होती है। जिसमें पहली सिंचाई 20 से 25 दिन बाद तथा उसके बाद 20 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए।

कटाई
किस्म कटाई के लिए 118–124 दिन (औसत 122 दिन) में तैयार हो जाती है।

अनुमानित उपज
किस्म की औसत उपज 19.5 कु. प्रति एकड़ तथा उपज क्षमता 25.9 कु. प्रति एकड़।

डी बी डब्ल्यू 187 की फसल

डी बी डब्ल्यू 187 के दाने